पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रकृति (?) विकास को बढ़ावा देना है।

① इसी पर्यावरण की क्षति एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण विश्व प्रतिदिन ... जा रही है ... जीवन बचाने के लिए पर्यावरण बचाओ ② जीवन बचाओ, पर्यावरण बचाओ, पृथ्वी बचाओ, धरती को स्वर्ग बनाना है पर्यावरण दिवस मनाना है।

विश्व पर्यावरण दिवस 2021

सतत विकास कल्पनाएं

विश्व पर्यावरण दिवस 2021 की थीम है "सतत विकास फिर से कल्पना करें, फिर से बनाएं, फिर से पुनर्स्थापित करें"। विश्व को मनाने का उद्देश्य पर्यावरण के मुद्दों के बारे में आम लोगों को जागरूकता फैलाने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। 2 आम लोगों को विभिन्न समाज एवं [struck] समुदायों के उपायों में सक्रिय को [struck] रूप से पर्यावरण ... किया जाता है तथा एजेंट बनाने के लिए प्रोत्साहित ... भविष्य को सुरक्षित स्वच्छ व अधिक समृद्ध परिवेश को प्रोत्साहित करने के लिए, आसपास के परिवेश को स्वच्छ बनाने के लिए प्रोत्साहित एवं सुरक्षित और स्वच्छ बनाने के लिए किया जाता है।

पर्यावरण को कुछ जैसे जीवन की बर्बादी व ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना, नुकसान, वनों की कटाई, ग्लोबल ... के लिए विश्व पर्यावरण इत्यादि को बताने के लिए ... की गयी थी। दिवस मनाने की शुरुआत कई तरीकों सहित शामिल पर्यावरण संरक्षण के लिए सौर ऊर्जा उत्पादन, प्रदूषण से बचाने के माध्यम से ऊर्जा उत्पादन, सौर स्रोतों के माध्यम से विकास, प्रदूषण रहित नये जल निकासी तंत्र का विकास, मैंग्रोव को बढ़ावा, मैंग्रोव के लिए आम लोगों नीति को बढ़ावा, कार्बन आदि के इस्तेमाल के लिए प्रकृति के इस्तेमाल, समलता (?) जंगल प्रभाव को बढ़ावा देना, प्राकृतिक जंगलों का प्रभाव को बढ़ावा देना, ग्रीन हाउस गैसों के लिए हाइड्रो उत्पादन को बढ़ावा देना, निम्नकुल भूमि पर ध्यान देना, बिजली उत्पादन, ... इस्तेमाल, निम्न ... द्वारा बायो ... को बढ़ावा देना, शक्ति का इस्तेमाल, पेड़ लगाने के द्वारा ... उत्पादन को बढ़ावा देना है।

संयुक्त राष्ट्र के संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा 1972 से 100 देशों द्वारा मिलकर विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाते हैं। वार्षिक उत्सव के रूप में कार्यक्रम हैं, प्रत्येक ... के द्वारा आयोजित किया जाता है, विशेष थीम विषय प्रचारित होता है। पर्यावरण के बारे में जागरूकता और प्रोत्साहन देने हेतु सकारात्मक गतिविधियां सामाजिक ... प्रतियोगिता ... आर्थिक ... पूंजी ... "जैव 2020 की थीम ... विविधता को ... दिवस मनाये ... विविधता ... पेड़ पौधे व जानवरों की प्रजातियों को बचाना है।" ②

पर्यावरण दिवस मुख्य स्लोगन है।

"धरती जीवनयोग्य बनाता है, धरा को हरा-भरा बनाता है
पर्यावरण को सुरक्षित बनाता है, धरती को स्वर्ग बनाता है
पेड़ लगाकर महत्व बनाता है
देश को स्वच्छ बनाता है, सम्मान बनाता है, धरती को
पर्यावरण का महत्व सबका
प्रदूषण मुक्त बनाता है।

2021 की थीम मुख्य संदेश है। अगर हम पर्यावरण को
नारा बोलेंगे तो हमारे पास समाज भी नहीं बचेगा,
मानवजीवन रहते में, हम सब की जिम्मेदारी
इसमें है कि पेड़ लगायेंगे, पेड़ बचायेंगे, पर्यावरण
सुरक्षा की जिम्मेदारी लेंगे, पूरी दुनिया को
साफ और हरा रखेंगे, स्वच्छ भारत, ग्रीन सिटी,
विकास को कब इतना नहीं बढ़ाओगे कि
पर्यावरण प्रदूषण बढ़े कि प्राकृतिक संसाधनों
से बचाओगे। पर्यावरण प्रदूषण फैलाकर
प्राकृतिक संसाधनों से कैसे बच पाओगे।
यह भी स्पष्ट संदेश है कुछ भी नहीं होगा केवल
विश्व पर्यावरण दिवस मनाने से, पर्यावरण
शुद्ध होगा पेड़ लगाने से। धरती से प्यारा दुनिया में
वास्तव कोई जगह नहीं है।

श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने
पूर्व प्रधानमंत्री
"पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति एवं उसका विश्व के
भविष्य पर प्रभाव विषय पर कहा था" पर्यावरण
सुरक्षा की दिशा में यह भारत का प्रारम्भिक
कदम है, हम प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण
दिवस मनाते हैं उसी समय से सुनिश्चित
करने कानून लाया जाता है पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 19
पर्यावरण से सम्बन्धित
नवम्बर 1986 से लागू हुआ, जलवायु, जमीन
इन्हीं से सम्बन्धित कानून

—3

तथा मानव, पौधे, सूक्ष्म जीव, अन्य जीवित पदार्थ आदि
पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं।

क्षतिसंख्या को हानि है।

2021 की थीम में मुख्य हैं तालाब, नदी, नाले को
प्रदूषित नहीं करें, जल का दुरुपयोग नहीं करें तथा
इस्तेमाल बाद बन्द करें, बिजली का अनावश्यक उपयोग
नहीं करें, इस्तेमाल के बाद बल्ब, पंखे या अन्य उपकरणों
को बंद करें कूड़ा ~~कचरा~~ कचरा को डस्टबिन में फेंकें और
दूसरों को इसके लिए प्रेरित करें, इससे प्रदूषण नहीं होगा।
प्लास्टिक और पालिथिन का उपयोग बंद करें और उसके
बदले ~~कागज~~ कागज के थैले या बैग का प्रयोग करें।
पशु पक्षियों के प्रति दया भाव रखें, जंगली जानवरों
लिए साइकिल का उपयोग करें
सम्पूर्ण मानवता का अस्तित्व प्रकृति पर
निर्भर है। इसलिए एक स्वच्छ एवं प्रदूषित पर्यावरण
के बिना मानव समाज की कल्पना अधूरी है। प्रकृति
को बचाने के लिए संकल्प लेना होगा। वर्ष में कम से
कम एक पौधा अवश्य लगायें और उसे बचायें तथा
पेड़ पौधों के हरियाली में सहयोग करें, घर की बालकनी
में पौधों को स्थान दें, उनका
क्यारी, गमला, बगीचे से प्रकृति समूह में चिंतन, मनन,
पालन पोषण करें,
विमर्श करें। ~~प्रकृति~~ राष्ट्रपति बाइडेन ने
~~अन्तर्राष्ट्रीय~~ अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समय सही कहा था, "कोई भी
राष्ट्र प्रकृति की जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान
नहीं कर सकता है। वहाँ के समाधानों का रिश्ता बनाना होगा।
हम सब इस पर निर्भर हैं।

पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता। डा. [illegible] सिंह

विश्व शब्दकोश के अनुसार "पर्यावरण उन सभी दशाओं, प्रणालियों तथा प्रभावों का योग है जो जीवों व उनकी प्रजातियों के विकास, जीवन व मृत्यु को प्रभावित करते हैं।" प्रसिद्ध वैज्ञानिक व परिस्थितिविदो के अनुसार भी प्रभावकारी दशाओं का सम्पूर्ण योग पर्यावरण कहलाता है इसमें जीवन की परिस्थितियों के सम्पूर्ण तथ्य आपसी सामंजस्य से वातावरण बनाते हैं। इस प्रकार पर्यावरण अनेक तत्वों से मिलकर बना है। इसका प्रभाव जीवधारियों पर पड़ता है। इसको जैविक व अजैविक दोनो घटक मिलकर निर्माण करते हैं तथा इसका मानव व अन्य प्राणियों से गहरा सम्बन्ध है।

इस प्रकार पर्यावरण व परिस्थितिक असन्तुलन का ~~मानव~~ मनुष्यजीवन पर प्रभाव पड़ता है। शहरीकरण, सड़कों व भवनों का निर्माण, जनसंख्या का घनत्व, ~~उद्योग~~, परिवहन, मशीनीकरण, औद्योगिकीकरण व व्यवसायिकीकरण, वनों व पेड़ों का उन्मूलन, मरुस्थलीकरण, जलमग्नता एवं लवणता, भूमि का निम्नीकरण, उर्वरकों एवं कीटनाशकों का अधिक प्रयोग, अधिक चराई व जंगलों का [illegible] अधिक उपयोग, खनिजों की खुदाई अनेक प्रकार के प्रदूषण उत्पन्न कर पर्यावरण सन्तुलन एवं उसकी गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव डालते हैं, प्रदूषण बढ़ाते हैं।

विश्व में एक तिहाई जमीन वन क्षेत्र है। 1.6 बिलियन मनुष्यों का जीवननिर्वाह वनक्षेत्र से होता है। 300 मिलियन लोग वनों में निवास करते हैं। 30 प्रतिशत वनों का उपयोग लकड़ी अथवा अन्य उत्पाद में काम होता है। वन उपज से लगभग प्रतिवर्ष 330 बिलियन डालर का व्यापार होता है। गत वर्षों में जो वन उन्मूलन हुआ है उसकी भरपाई

केरोसीन, फर्टीलाइजर आदि के मूल्यों में कमी कर सब्सिडी का लाभ देने की अपेक्षा नकद रुपया सीधे किसान को मिलेगा।

बजट में बुनकरों के अलावा आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का वेतन भी दुगना किया गया है, उन्हें अब 1500 माहवार के बजाय 3000 रुपया माहवार मिलेगा। उनके साथ हेल्पर के वेतन व राशी में भी वृद्धि की गई है। ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं के साथ निवेश विशेषकर और निवेशकों को प्रोत्साहन देने का जो कदम उठाया गया है व भविष्य में भी कृषि दर को नीचे गिरने नहीं देगा। उच्च मुद्रास्फीति के दबाव के बीच पेश किये गये आगामी वर्ष के बजट में नयी पंचवर्षीय योजना में समावेशी विकास के लक्ष्य को देखते हुए विकास की गति को संतुलित करने का प्रयास किया गया है। सरकार ने बजट घाटे को कम करने, उत्पादक व्यय को बढ़ाने, विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतियों को निवेश करने के लिए आकर्षित करने का भी प्रयास किया है। सरकार को करों से मिलने वाले राजस्व में गत वर्षों के मुकाबले वृद्धि हुई है। रक्षा क्षेत्र की आवश्यकता को पूरा करने का भी भरसक प्रयास करने का वायदा किया गया है। मौद्रिक एवं भारत के कारण सरकार राजस्व की बकाया को सीमित रखने में सफल रही है। विदेशी निवेश मुद्रा भण्डार बढ़ा है। सीमा शुल्क में कमी के द्वारा निर्माण क्षेत्र की स्फीति को कम रखने का प्रयास भी किया गया है।

उच्च मुद्रास्फीति सरकार के लिए सिरदर्द बनी हुई है। कीमतों में सर्वाधिक वृद्धि प्राथमिक वस्तुओं में हुई है जिसने थोक मूल्य सूचकांक को बढ़ा दिया है। सरकार में वर्तमान में ~~तेल~~ तेल उत्पादक विदेशी राष्ट्रों के राजनैतिक हालात व तेल की कीमतों में वृद्धि, सप्लाई में कमी आदि कारणों से पेट्रोलियम पदार्थों पर चल रहे करों में फेरबदल या कमी नहीं कर सकी है। लेकिन कीमतों में वृद्धि महंगाई बढ़ने के लिए जिम्मेदार मानी जाती है। यह भी कहा जाता है कि मांग में वृद्धि होने से कीमतों में वृद्धि हुई है, पूर्णतया सही नहीं है ~~को~~ कि जब पूर्ववर्ती वर्षों में सरकार आर्थिक समग्र वृद्धि जब लगभग 9 प्रतिशत हो।

विवाह समारोह में बड़ी दावतों पर रोक लगाने व उसे नियन्त्रित करने की सोच रही है। यह सोच उचित दिशा में है क्योंकि कीमत स्फीति ग्राम प्रभावित है इसका सबसे अधिक प्रभाव गरीब वर्गों पर पड़ता है क्योंकि कीमत सूचकांक में प्राथमिक वस्तुओं का महत्व लगभग 22 प्रतिशत है, गरीब व अतिगरीब परिवारों के बजट में 75 प्रतिशत तक इन्हीं वस्तुओं पर व्यय होता है।

वित्त मंत्री ने विकास दर को बनाये रखने के साथ मुद्रास्फीति की दर कम करने व प्राथमिक व आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने, सप्लाई लाइन को ठीक करने व महंगाई कम करने का वायदा किया है। वित्तमंत्री ने स्वीकार किया है कि खाद्य व टेक्सटाइल बाजार भाव में काफी चिन्ता है, उन्हें कीमतों को कम कर उन्हें स्थिर करना ही होगा। सरकार को खाद्य पदार्थों के उत्पादन अधिक वसूली, संरक्षण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, भंडारण, कृषि एवं मांग के असंतुलन की समाप्ति, वायदा बाजार की समाप्ति नहीं तो नियंत्रण आदि द्वारा मुद्रास्फीति व महंगाई की रफ्तार को हर हाल में नियंत्रित करना ही होगा। गरीबी अमीरी के बढ़ते अंतर को कम करना ही होगा। केन्द्र को राज्य सरकारों को भी अपने कर्तव्यों का एहसास कराना होगा और मजबूर करना होगा। कृषि क्षेत्र ही नहीं बल्कि विनिर्माण एवं उपभोक्ता उत्पादन के क्षेत्र में भी स्फीति की प्रवृत्तियां आई हैं। दवाओं की कीमतों में ही 100 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। कुल मिलाकर बजट में कृषि, ग्रामीण विकास को तरजीह दी गई है सरकार को महंगाई रोकने के लिए भी इसी प्रकार की इच्छाशक्ति के साथ कारगर कदम उठाने पड़ेंगे।

[signature]
24/2/2011

पर्यावरण - दशा और दिशा

सत्यनारायण

पर्यावरण का अर्थ है, जो हमारे चारों ओर परिलक्षित होता है। सभी प्रकार के जीव और भौतिक तत्व, वायु, जल, पेड़, प्राणी पर्यावरण के अंग हैं। बढ़ती जनसंख्या व औद्योगीकरण ने प्रकृति निर्मित संरचना पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है व वातावरण को प्रदूषित किया है। भारत में वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में परिवहन, जैव ईंधन का उपयोग, बिजली उत्पादन, उद्योग, निर्माण, अपशिष्ट दहन, कृषि अपशिष्टों का दहन आदि मुख्यतः रहे हैं।

भारत में जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है वह बढ़ते वायु प्रदूषण का बड़ा संकेत है इसके पीछे का कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग होना है। बढ़ते वायु प्रदूषण का दूसरा बड़ा कारण बढ़ते हुए उद्योग हैं जिनसे निकलने वाला धुआं वायु को प्रदूषित करता है। सबसे ज्यादा वायु को प्रदूषित करता है, वनों की कटाई तीसरा बड़ा कारण है, वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण वायु प्रदूषण बढ़ा है, तथा वायुमण्डल में कार्बन डाई ऑक्साइड के स्तर में बढ़ोतरी हो रही है। चौथा प्रमुख कारण लगातार खनन कार्य है जिससे वायु में भारी मात्रा में धूल व साधन निकलकर वायु को प्रदूषित करते हैं। कृषि विधियों में कीटनाशक व उर्वरकों का उपयोग किया जाता है वायुमण्डल को प्रदूषित करता है। पराली दहन भी एक बड़ा वायु प्रदूषक है।

जिससे श्वसन रोग, मृत बच्चों का जन्म, फेफड़े का कैंसर, ल्यूकेमिया जैसे रोगों का विकार बढ़ जाता है। मौतों व बीमारियों के कारण सकल घरेलू उत्पाद को 2.60 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। वायु प्रदूषण से मृत्यु दर 115 की सदी बढ़ी है। WHO के मुताबिक प्रतिवर्ष लगभग 38 मिलियन लोगों की असामयिक मौत का कारण घातक वायु प्रदूषण है।